श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

पञ्चत्रिंशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—गोप्यः कृष्णे वनं याते तमनुद्रुतचेतसः।
कृष्णलीलाः प्रगायन्त्यो निन्युर्दुःखेन वासरान् ॥१॥

पदच्छेद— गोप्यः कृष्णे वनम् याते तम् अनुद्रुत चेतसः।
कृष्ण लीलाः प्रगायन्त्यः निन्युः दुःखेन वासरान् ॥

शब्दार्थं—

गोप्यः	७. गोपियाँ	कृष्ण	८. श्रीकृष्ण की
कृष्णे	१. श्रीकृष्ण भगवान् के	लीलाः	९. लीलाओं का
वनम्	२. वन में	प्रगायन्त्यः	१०. गायन करती हुईं
याते	३. चले जाने पर	निन्युः	१३. बिताती थीं
तम्	४. उनके	दुःखेन	११. बड़े कष्ट से
अनुद्रुत	५. पीछे गये हुये	वासरान् ॥	१२. दिन
चेतसः।	६. चित्तवाली		

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण भगवान् के वन में चले जाने पर उनके पीछे गये हुये चित्तवाली गोपियाँ श्रीकृष्ण की लीलाओं का गायन करती हुईं बड़े कष्ट से दिन बिताती थीं ॥

द्वितीयः श्लोकः

गोप्य ऊचुः—वामबाहुकृतवामकपोलो वल्गितभ्रुरधरार्पितवेणुम्।
कोमलाङ्गुलिभिराश्रितमार्गं गोप्य ईरयति यत्र मुकुन्दः ॥२॥

पदच्छेद— वाम बाहु कृत वाम कपोलः वल्गितभ्रुः अधर अर्पित वेणुम्।
कोमल अङ्गुलिभिः आश्रित मार्गम् गोप्यः ईरयति यत्र मुकुन्दः ॥

शब्दार्थं—

वाम बाहु	४. बायीं बाँह की ओर	कोमल	१०. सुकुमार
कृत	५. झुका करके	अङ्गुलिभिः	११. अङ्गुलियों को
वाम कपोलः	३. अपने बाँये कपोल को	आश्रित	१३. रख कर
वल्गितभ्रुः	६. भौंहें चलाते हुये	मार्गम्	१२. छेदों पर
अधर	८. अधरों से	गोप्यः	१. हे गोपियो !
अर्पित	९. लगाते हैं (तथा अपनी)	ईरयति	१४. मधुर तान छेड़ते हैं
वेणुम्।	७. बाँसुरी को	यत्र मुकुन्दः ॥	२. जहाँ श्रीकृष्ण

श्लोकार्थ—हे गोपियो ! जहाँ श्रीकृष्ण अपने बाँयें कपोल को बायीं बाँह की ओर झुका करके भौंहें चलाते हुये बाँसुरी को अधरों से लगाते हैं। तथा अपनी सुकुमार अंगुलियों को छेदों पर रख कर मधुर तान छेड़ते हैं ॥

तृतीयः श्लोकः

व्योमयानवनिताः सह सिद्धैर्विस्मितास्तदुपधार्य सलज्जाः ।
काममार्गणसमर्पितचित्ताः कश्मलं ययुरपस्मृतनीव्यः ॥३॥

पदच्छेद— व्योमयान वनिताः सह सिद्धैः विस्मिताः तत् उपधार्य सलज्जाः ।
काम मार्गण समर्पित चित्ताः कश्मलम् ययुः अपस्मृत नीव्यः ॥

शब्दार्थ—

व्योमयान	३.	विमानों पर आई हुईं	काम	६.	काम के
वनिताः	४.	सुन्दरियाँ	मार्गण	१०.	बाणों से
सह	२.	साथ	समर्पित	११.	बिंधे हुये
सिद्धैः	१.	वहाँ सिद्ध गणों के	चित्ताः	१२.	चित्त वाली (होकर)
विस्मिताः	७.	आश्चर्य चकित (और)	कश्मलम्	१३.	अचेत
तत्	५.	उस बात को	ययुः	१४.	हो जाती हैं
उपधार्य	६.	सुनकर	अपस्मृत	१६.	सुधि नहीं रहती है
सलज्जाः ।	८.	लज्जित (तथा)	नीव्यः ॥	१५.	उन्हें नीवी खुलने की भी

श्लोकार्थ—वहाँ सिद्ध गणों के साथ विमानों पर आई सुन्दरियाँ आश्चर्यचकित और लज्जित तथा काम के बाणों से बिंधे हुये चित्त वाली होकर अचेत हो जाती हैं। उन्हें नीवी खुलने की भी सुधि नहीं रहती है ॥

चतुर्थः श्लोकः

हन्त चित्रमबलाः शृणुतेदं हारहास उरसि स्थिरविद्युत् ।
नन्दसूनुरयमार्तजनानां नर्मदो यर्हि कूजितवेणुः ॥४॥

पदच्छेद— हन्त चित्रम् अबलाः शृणुत इदम् हार हासः उरसि स्थिर विद्युत् ।
नन्द सूनुः अयम् आर्त जनानाम् नर्मदः यर्हि कूजित वेणुः ॥

शब्दार्थ—

हन्त	१.	अहो	नन्द	१२.	नन्द जी के
चित्रम्	४.	आश्चर्य की बात	सूनुः	१३.	पुत्र
अबलाः	२.	गोपियो ! तुम	अयम्	११.	ये
शृणुत	५.	सुनो	आर्तजनानाम्	९.	दुःखी जनों को
इदम्	३.	यह	नर्मदः	१०.	सुख देने वाले
हारहासः	७.	हार की शोभा	यर्हि	१४.	जब
उरसि	६.	उनके वक्षः स्थल पर	कूजित	१६.	बजाते हैं
स्थिर विद्युत् ।	८.	अचल बिजली जैसी है	वेणुः ॥	१५.	बाँसुरी

श्लोकार्थ—अहो ! गोपियो ! तुम यह आश्चर्य की बात सुनो। उनके वक्षः स्थल पर हार की शोभा अचल बिजली जैसी है। ये दुःखी जनों को सुख देने वाले नन्द जी के पुत्र जब बाँसुरी बजाते हैं ॥

पञ्चमः श्लोकः

वृन्दशो व्रजवृषा मृगगावो वेणुवाद्यहृतचेतस आरात्।
दन्तदष्टकवला धृतकर्णा निद्रिता लिखितचित्रमिवासन् ॥५॥

पदच्छेद— वृन्दशः व्रजवृषाः मृगगावः वेणुवाद्य हृत चेतसः आरात्।
दन्त दष्ट कवलाः धृत कर्णाः निद्रिताः लिखित चित्रम् इव आसन् ॥

शब्दार्थ—

वृन्दशः	४. झुन्ड के झुन्ड	दन्तदष्ट	८. दाँतों से काटे गये
व्रज	३. व्रज के	कवलाः	९. घास का ग्रास लिये
वृषाः	५. बैल	धृतकर्णाः	१०. कानों को खड़े किये हुये
मृगगावः	६. हरिण-गाय	निद्रिताः	११. सोये हुये से
वेणु वाद्य	१. तब बांसुरी की ध्वनि से	लिखित	१२. दीवार पर लिखे हुये
हृतचेतसः	२. चुराये गये चित्त वाले	चित्रम् इव	१३. चित्र के समान
आरात्।	७. पास में (आकर)	आसन् ॥	१४. स्थिर खड़े हो जाते थे

श्लोकार्थ—तब बांसुरी की ध्वनि से चुराये गये चित्त वाले व्रज के झुण्ड के झुन्ड बैल, हिरण, गाय पास में आकर दाँतों से काटे गये घास का ग्रास लिये, कानों को खड़े किये हुये, सोये हुये से दीवार पर लिखे हुये के समान स्थिर खड़े हो जाते थे ॥

षष्ठः श्लोकः

बर्हिणस्तबकधातुपलाशैर्बद्धमल्लपरिबर्हविडम्बः ।
कर्हिचित् सबल आलि स गोपैर्गाः समाह्वयति यत्र मुकुन्दः ॥६॥

पदच्छेद— बर्हिणस्तबकधातु पलाशैः बद्ध मल्ल परिबर्ह विडम्बः ।
कर्हिचित् सबलः आलि सः गोपैः गाः समाह्वयति यत्र मुकुन्दः ॥

शब्दार्थ—

बर्हिणः	४. मोर पंख	कर्हिचित्	३. कभी
स्तबक	५. फूल के गुच्छे	सबलः	१३. बलराम (और)
धातु	६. धातु (और)	आलि	१. हे सखि !
पलाशैः	७. पल्लवों को	सः	१२. वे
बद्ध	८. बाँधे हुये	गोपैः	१४. गोपों के साथ
मल्ल	९. पहलवान का सा	गाः	१५. गौओं को
परिबर्ह	१०. वेष	समाह्वयति	१६. पुकारते हैं
विडम्बः।	११. बनाकर	यत्र मुकुन्दः ॥	२. जहाँ श्रीकृष्ण

श्लोकार्थ—हे सखि ! जहाँ श्रीकृष्ण कभी मोर पंख, फूल के गुच्छे, धातु और पल्लवों को बाँधे हुये पहलवान का सा वेष बनाकर वे बलराम और गोपों के साथ गौओं को पुकराते है ॥

सप्तमः श्लोकः

तर्हि भग्नगतयः सरितो वै तत्पदाम्बुजरजोऽनिलनीतम् ।
स्पृहयतीर्वयमिवाबहुपुण्याः प्रेमवेपितभुजाः स्तिमितापः ॥७॥

पदच्छेद— तर्हि भग्न गतयः सरितः वै तत् पद अम्बुज रजः अनिल नीतम् ।
स्पृहयतीः वयम् इव अबहु पुण्याः प्रेम वेपित भुजाः स्तिमित आपः ॥

शब्दार्थ—

तर्हि	१.	उस समय	स्पृहयतीः	१२.	कामना करती हैं पर
भग्न	४.	रुक जाती है (वे)	वयम्	१६.	हमारी
गतयः	३.	गति	इव	१७.	तरह
सरितः वै	२.	नदियों की	अबहु पुण्याः	१८.	अल्प पुण्य वाली है
तत् पद	५.	उन श्रीकृष्ण के चरण	प्रेम	१३.	प्रेम के कारण
अम्बुज	६.	कमल की	वेपित	१४.	काँपती हुई
रजः	७.	धूलि को	भुजाः	१५.	भुजाओं वाली
अनिल	८.	वायु द्वारा	स्तिमित	११.	रुके हुये
नीतम् ।	९.	अपने पास पहुँचाने की	आपः ॥	१२.	जलवाली

श्लोकार्थ—उस समय नदियों की गति रुक जाती हैं। वे उन श्रीकृष्ण के चरण कमल की धूलि को वायु द्वारा अपने पास पहुँचाने की कामना करती है। रुके हुये जलवाली प्रेम के कारण काँपती हुई भुजाओं वाली हमारी तरह अल्प पुण्य वाली हैं ॥

अष्टमः श्लोकः

अनुचरैः समनुवर्णितवीर्य आदिपूरुष इवाचलभूतिः ।
वनचरो गिरितटेषु चरन्तीर्वेणुनाऽऽह्वयति गाः स यदा हि ॥८॥

पदच्छेद— अनुचरैः समनु वर्णित वीर्य आदि पुरुषः इव अचल भूतिः ।
वन चरः गिरि तटेषु चरन्तीः वेणुना आह्वयति गाः सः यदा हि ॥

शब्दार्थ—

अनुचरैः	१.	अनुचरों द्वारा	वनचरः	९.	वन विहारी
समनु	३.	ज ते हुये	गिरि	११.	पर्वत की
वर्णित	२.	गायन किये	तटेषु	१२.	घाटी में
वीर्यः	४.	पराक्रम वाले (तथा)	चरन्तीः	१३.	चरती हुई
आदि पूरुषः	५.	आदि पुरुष के	वेणुना	१५.	बाँसुरी में
इव	६.	समान	आह्वयति	१६.	पुकारते हैं
अचल	७.	निश्चल	गाः	१४.	गौओं को
भूतिः ।	८.	ऐश्वर्य वाले	सः यदाहि ॥	१०.	वे श्रीकृष्ण जब

श्लोकार्थ—अनुचरों द्वारा गायन किये जाते हुये पराक्रम वाले तथा आदि पुरुष के समान निश्चल ऐश्वर्य वाले वनविहारी वे श्रीकृष्ण जब पर्वत की घाटी में चरती हुई गौओं को बाँसुरी से पुकारते हैं ॥

नवमः श्लोकः

वनलतास्तरव आत्मनि विष्णुं व्यञ्जयन्त्य इव पुष्पफलाढ्याः ।
प्रणतभारविटपा मधुधाराः प्रेमहृष्टतनवः ससृजुः स्म ॥९॥

पदच्छेद— वनलताः तरवः आत्मनि विष्णुम् व्यञ्जयन्त्यः इव पुष्प फलआढ्याः ।
प्रणत भार विटपाः मधुधाराः प्रेमहृष्ट तनवः ससृजुः स्म ॥

शब्दार्थ—

वनलताः	४.	वन की लतायें	प्रणत	१०.	झुकी हुई
तरवः	३.	वृक्ष (तथा)	भार	९.	भार से
आत्मनि	५.	अपने भीतर	विटपाः	११.	डालियों वाली (तथा)
विष्णुम्	६.	विष्णु की	मधुधाराः	१४.	मधु की धारायें
व्यञ्जयन्त्यः	७.	अभिव्यक्ति करती हुई के	प्रेमहृष्टाः	१२.	प्रेम से पुलकित
इव	८.	समान	तनवः	१३.	शरीर वाली होकर
पुष्प	१.	उस समय पुष्पों और	ससृजुः स्म ॥	१५.	उडेलने लगती हैं
फलाढ्याः ।	२.	फलों से लदे हुये			

श्लोकार्थ—उस समय पुष्पों और फलों से लदे हुये वृक्ष तथा वन की लतायें अपने भीतर विष्णु की अभिव्यक्ति करती हुई के समान भार से झुकी हुई डालियों वाली तथा प्रेम से पुलकित शरीर वाली होकर मधु की धारारें उडेलने लगती हैं ॥

दशमः श्लोकः

दर्शनीयतिलको वनमालादिव्यगन्धतुलसीमधुमत्तैः ।
अलिकुलैरलघुगीतमभीष्टमाद्रियन् यर्हि सन्धितवेणुः ॥१०॥

पदच्छेद— दर्शनीय तिलकः वनमाला दिव्य गन्ध तुलसी मधु मत्तैः ।
अलिकुलैः लघु गीतम् अभीष्टम् आद्रियन् यर्हि सन्धित वेणुः ॥

शब्दार्थ—

दर्शनीय	१.	देखने योग्य	अलिकुलैः	९.	भौंरों के झुन्डों के
तिलकः	२.	तिलक वाले (श्रीकृष्ण)	लघु	१०.	उच्चस्वर के
वनमाला	३.	वनमाला की	गीतम्	१२.	गुञ्जार का
दिव्य	४.	दिव्य	अभीष्टम्	११.	अभीष्ट
गन्ध	५.	सुगन्ध (तथा)	आद्रियन्	१३.	आदर करते हुये
तुलसी	६.	तुलसी के	यर्हि	१४.	जब
मधु	७.	मधु से	सन्धित	१६.	बजाते हैं
मत्तैः ।	८.	मतवाले	वेणुः ॥	१५.	बाँसुरी

श्लोकार्थ—देखने योग्य तिलक वाले श्रीकृष्ण वनमाला की दिव्य सुगन्ध तथा तुलसी के मधु से मतवाले भौंरों के झुन्डों के उच्चस्वर के अभीष्ट गुञ्जार का आदर करते हुये जब बाँसुरी बजाते हैं ॥

एकादशः श्लोकः

सरसि सारहंसविहङ्गाश्चारुगीतहृतचेतस एत्य ।
हरिमुपासत ते यतचित्ता हन्त मीलितदृशो धृतमौनाः ॥११॥

पदच्छेद— सरसि सारस हंस विहङ्गाः चारु गीत हृत चेतसः एत्य ।
हरिम् उपासते ते यत चित्ताः हन्त मीलित दृशः धृत मौनाः ॥

शब्दार्थ—

सरसि	८. सरोवर से	हरिम्	१५. श्रीकृष्ण की
सारस	५. सारस	उपासते	१६ उपासना करने लगते हैं
हंस	६. हंस (आदि)	ते	१०. और वे
विहङ्गाः	७. पक्षी	यतचित्ताः	११. एकाग्रमन से
चारुगीत	२. सुन्दर गीत से	हन्त	१. आश्चर्य की बात है कि
हृत	३. हरे हुये	मीलित	१३. मूंदकर
चेतसः	४. चित्त वाले	दृशः	१२. आँखें
एत्य ।	९. निकल कर आ जाते	धृतमौनाः ॥	१४. चुप्पी साधकर

श्लोकार्थ—आश्चर्य की बात है कि सुन्दर गीत से हरे हुये चित्त वाले सारस हंस आदि पक्षी सरोवर से निकल कर आ जाते हैं। और वे एकाग्रमन से आँखें मूंदकर चुप्पी साधकर श्रीकृष्ण की उपासना करने लगते हैं ॥

द्वादशः श्लोकः

सहबलः स्रगवतंसविलासः सानुषु क्षितिभृतो व्रजदेव्यः ।
हर्षयन् यर्हि वेणुरवेण जातहर्ष उपरम्भति विश्वम् ॥१२॥

पदच्छेद— सह बलः स्रग् अवतंस विलासः सानुषु क्षिति भृतः व्रज देव्यः ।
हर्षयन् यर्हि वेणु रवेण जात हर्षः उपरम्भति विश्वम् ॥

शब्दार्थ—

सह	४. साथ (श्रीकृष्ण)	व्रजदेव्यः	१. अरी व्रज देवियो !
बलः	३. बलराम जी के	हर्षयन्	११. हर्षित करते हुयें मानों
स्रग्	५. फूलों की माला का	यर्हि	२. जब
अवतंस	६. आभूषण	वेणुरवेण	१०. वंशी की ध्वनि से
विलासः	७. धारण करके	जातहर्ष	१२. आनन्द में भर कर
सानुषु	९. शिखर पर चढ़कर	उपरम्भति	१४. आलिंगन कर रहे हैं
क्षितिभृतः ।	८. गिरिराज पर्वत के	विश्वम् ॥	१३. संसार को

श्लोकार्थ—अरी व्रजदेवियो ! जब बलराम जी के साथ श्रीकृष्ण फूलों की माला का आभूषण धारण करके गिरराज पर्वत के शिखर पर चढ़कर वंशी की ध्वनि से हर्षित करते हुये मानों आनन्द में भर कर संसार को आलिंगित कर रहे है ॥

त्रयोदशः श्लोकः

महदतिक्रमणशङ्कितचेता मन्दमन्दमनुगर्जति मेघः।
सुहृदमभ्यवर्षत् सुमनोभिश्छायया च विदधत् प्रतपत्रम् ॥१३॥

पदच्छेद— महत् अतिक्रमण शङ्कित चेताः मन्द-मन्दम् अनुगर्जति मेघः।
सुहृदम् अभ्यवर्षत् सुमनोभिः छायया च विदधत् प्रतपत्रम् ॥

शब्दार्थ

महत्	१. बड़ों की बात का	सुहृदम्	८. अपने मित्र श्रीकृष्ण पर
अतिक्रमण	२. उल्लंघन करने से	अभ्यवर्षत्	१०. वर्षा करने लगता है
शङ्कित	३. सशङ्कित	सुमनोभिः	९. फूलों की
चेताः	४. मन वाला	छायया	१४. छाया करता है
मन्दमन्दम्	६. धीरे-धीरे	च	११. और
अनुगर्जति	७. गरजता है (और)	विदधत्	११. बन कर
मेघः।	५. बादल	प्रतपत्रम् ॥	१२. छाता

श्लोकार्थ—बड़ों की बात का उल्लंघन करने से सशङ्कित मन वाला बादल धीरे-धीरे गरजता है। और अपने मित्र श्रीकृष्ण पर फूलों की वर्षा करने लगता है। और छाता बन कर छाया करता है ॥

चतुर्दशः श्लोकः

विविधगोपचरणेषु विदग्धो वेणुवाद्य उरुधा निजशिक्षाः।
तव सुतः सति यदाधरबिम्बे दत्तवेणुरनयत् स्वरजातीः ॥१४॥

पदच्छेद— विविध गोप चरणेषु विदग्धः वेणु वाद्ये उरुधा निज शिक्षाः।
तव सुतः सति यदा अधर बिम्बे दत्त वेणुः अनयत् स्वर जातीः ॥

शब्दार्थ—

विविध	३. अनेक	तवसुतः	२. आपके पुत्र श्रीकृष्ण
गोप	४. ग्वालों के साथ	सति	१. हे सती यशोदा जी !
चरणेषु	५. खेल खेलने में बड़े	यदा	१०. जब वे
विदग्धः	६. चतुर हैं (उन्होंने)	अधर बिम्बे	११. लाल अधरों पर
वेणुवाद्य	७. वंशी पर	दत्तवेणुः	१२. बाँसुरी रख कर
उरुधाः	८. अनेक प्रकार के राग	अनयत्	१४. बजाने लगते हैं
निजशिक्षाः।	९. स्वयं सीख लिये हैं	स्वर जातीः ॥	१३. अनेक स्वरों में

श्लोकार्थ—हे सती यशोदा जी ! आपके पुत्र श्रीकृष्ण अनेक ग्वालों के साथ खेल-खेलने में बड़े चतुर हैं। उन्होंने अनेक प्रकार के राग स्वयं सीख लिये हैं। जब लाल अधरों पर बाँसुरी रखकर अनेक स्वरों में बजाने लगते हैं ॥

पञ्चदशः श्लोकः

सवनशस्तदुपधार्य सुरेशाः शक्रशर्वपरमेष्ठिपुरोगाः ।
कवय आनतकन्धरचित्ताः कश्मलं ययुरनिश्चिततत्त्वाः ॥१५॥

पदच्छेद— सवनशः तत् उपधार्य सुरेशाः शक्र शर्व परमेष्ठि पुरोगाः ।
कवयः आनत कन्धर चित्ताः कश्मलम् ययुः अनिश्चित तत्त्वाः ॥

शब्दार्थ—

सवनशः	१. वंशी की परममोहिनी और	कवयः	९. सर्वज्ञ हैं (वे)
तत्	२. नई तान	आनत	१३. झुका कर
उपधार्य	३. सुनकर	कन्धर	१२. गरदन के
सुरेशाः	४. बड़े बड़े देवता	चित्ताः	१४. मन से
शक्र	५. इन्द्र	कश्मलम्	१५. मोहित
शर्व	६. शंकर	ययुः	१६. हो गये
परमेष्ठि	७. ब्रह्मा	अनिश्चित	११. निश्चय न कर सकने से
पुरोगाः ।	८. आदि (जो)	तत्त्वाः ॥	१०. वास्तविकता का

श्लोकार्थ—वंशी की परममोहिनी और नई तान सुनकर बड़े बड़े देवता इन्द्र, शंकर, ब्रह्मा आदि जो सर्वज्ञ हैं, वे वास्तविकता का निश्चय न कर सकने से गरदन को झुकाकर मन से मोहित हो जाते हैं ।

षोडशः श्लोकः

निजपदाब्जदलैर्ध्वजवज्रनीरजाङ्कुशविचित्रललामैः ।
व्रजभुवः शमयन् खुरतोदं वर्ष्मधुर्यगतिरीडितवेणुः ॥१६॥

पदच्छेद— निज पद अब्ज दलैः ध्वज वज्र नीरज अङ्कुश विचित्र ललामैः ।
व्रजभुवः शमयन् खुरतोदम् वर्ष्मधुर्यं गतिः ईडित वेणुः ॥

शब्दार्थ—

निज	६. अपने	व्रजभुवः	८. व्रज भूमि की
पद अब्जदलैः	७. चरण कमलों से	शमयन्	११. शान्त करते हुये
ध्वजवज्र	१. ध्वज वज्र	खुर	९. गौओं के खुरों से
नीरज	२. कमल (तथा)	तोदम्	१०. खुदने की व्यथा को
अङ्कुश	३. अंकुश के	वर्ष्मधुर्य	१३. गजराज के समान
विचित्र	४. अनोखे	गतिः	१४. चाल से चल रहे हैं
ललामैः ।	५. सुन्दर चिह्नों से युक्त	ईडितवेणुः ॥	१२. बाँसुरी बजाते हुये श्रीकृष्ण

श्लोकार्थ—ध्वज, वज्र, कमल तथा अंकुश के अनोखे सुन्दर चिह्नों से युक्त अपने चरण कमलों से व्रज भूमि की गौओं के खुरों से खुदने की व्यथा को शान्त करते हुये एवम् बाँसुरी बजाते हुये श्रीकृष्ण गजराज के समान चाल से चल रहे हैं ॥

सप्तदशः श्लोकः

व्रजति तेन वयं सविलासवीक्षणार्पितमनोभववेगाः ।
कुजगतिं गमिता न विदामः कश्मलेन कबरं वसनं वा ॥१७॥

पदच्छेद— व्रजति तेन वयम् सविलास वीक्षण अर्पित मनोभव वेगाः ।
कुजगतिम् गमिताः न विदामः कश्मलेन कबरम् वसनम् वा ॥

शब्दार्थ—

व्रजति	१. जब वे चलते हैं	कुजगतिम्	८. वृक्षों के समान निश्चल गति को
तेन	२. तब उनकी चाल (और)	गमिता	९. प्राप्त कर लेती है
वयम्	७. हम	न विदामः	१४. हम नहीं जान पाती हैं
सविलास	३. विलास भरी	कश्मलेन	१०. मोह के कारण
वीक्षण	४. चितवन से (हमारा)	कबरम्	११. जूड़ा खुलने
अर्पित	६. बढ़ जाता है (और)	वसनम्	१३. वस्त्र उतरने को भी
मनोभववेगाः ।	५. काम वेग	वा ॥	१२. अथवा

श्लोकार्थ—अरी वीर ! जब वे चलते हैं तब उनकी चाल और विलास भरी चितवन से हमारा काम वेग बढ़ जाता है और हम वृक्षों के समान निश्चल गति को प्राप्त कर लेती हैं । मोह के कारण जूड़ा खुलने अथवा वस्त्र उतरने को भी नहीं जान पाती हैं ॥

अष्टादशः श्लोकः

मणिधरः क्वचिदागणयन् गा मालया दयितगन्धतुलस्याः ।
प्रणयिनोऽनुचरस्य कदांसे प्रक्षिपन् भुजमगायत यत्र ॥१८॥

पदच्छेद— मणिधरः क्वचित् आगणयन् गाः मालया दयित गन्ध तुलस्याः ।
प्रणयिनः अनुचरस्य कदा अंसे प्रक्षिपन् भुजम् अगायत यत्र ॥

शब्दार्थ—

मणिधरः	१. मणि धारण किये हुये	प्रणयिनः	९. प्रेमी
क्वचित्	२. कहीं श्रीकृष्ण	अनुचरस्य	१०. सखा के
आगणयन्	८. गिनते हुये	कदा	१५. कभी
गाः	७. गौओं को	अंसे	११. कन्धे पर
मालया	६. माला से	प्रक्षिपन्	१३. रख कर
दयित	३. प्रिय	भुजम्	१२. बाँह
गन्ध	४. गन्ध वाली	अगायत	१६. गाने लगते हैं
तुलस्याः ।	५. तुलसी की	यत्र ॥	१४. जब तब

श्लोकार्थ—मणि धारण किये हुये कहीं श्रीकृष्ण प्रिय गन्ध वाली तुलसी की माला से गौओं को गिनते हुये, प्रेमी सखा के कन्धे पर बाँह रख कर जब तब कभी गाने लगते हैं ॥

एकोनविंशः श्लोकः

क्वणितवेणुरववञ्चितचित्ताः कृष्णमन्वसत कृष्णगृहिण्यः ।
गुणगणार्णमनुगत्य हरिण्यो गोपिका इव विमुक्तगृहाशाः ॥१९॥

पदच्छेद— क्वचित् वेणुरव वञ्चित चित्ताः कृष्णम् अन्वसत कृष्ण गृहिण्यः ।
गुणगण अर्णम् अनुगत्य हरिण्यः गोपिका इव विमुक्त गृहाशाः ॥

शब्दार्थ—

क्वणित	१. बजती हुई	गुणगण	१४. गुण समूह के
वेणुरव	२. बाँसुरी की (ध्वनि से)	अर्णम्	१५. समुद्र (कृष्ण) का
वञ्चित	३. मोहित	अनुगत्य	१६. अनुगमन करने लगती हैं
चित्ताः	४. चित्तवाली	हरिण्यः	१३. हरिणियाँ
कृष्णम्	७. कृष्ण के पास	गोपिकाः	११. हम गोपियों के
अन्वसत	८. दौड़ आती हैं (और)	इव	१२. समान
कृष्ण	५. कृष्णसार मृगों की	विमुक्त	१०. छोड़ चुकने वाली
गृहिण्यः ।	६. रानियाँ	गृहाशाः ॥	९. घर की आशा

श्लोकार्थ—उस समय बजती हुई बाँसुरी की ध्वनि से मोहित चित्तवाली कृष्णसार मृगों की पत्नियाँ कृष्ण के पास दौड़ आती हैं। और घर की आशा छोड़ चुकने वाली हम गोपियों के समान हरिणियाँ गुण समूह के समुद्र कृष्ण का अनुगमन करने लगती हैं ॥

विंशः श्लोकः

कुन्ददामकृतकौतुकवेषो गोपगोधनवृतो यमुनायाम् ।
नन्दसूनुरनघे तव वत्सो नर्मदः प्रणयिनां विजहार ॥२०॥

पदच्छेद— कुन्द दाम कृत कौतुक वेषः गोप गोधन वृतः यमुनायाम् ।
नन्द सूनुः अनघे तव वत्सः नर्मदः प्रणयिनाम् विजहार ॥

शब्दार्थ—

कुन्ददाम	६. कुन्द के पुष्पों की माला से	नन्दसूनुः	९. नन्द जी के पुत्र (श्रीकृष्ण)
कृत	८. धारण किये हुये	अनघे	१. हे निष्पाप ! यशोदा जी
कौतुक वेषः	७. कौतुहल उत्पन्न करने वाला वेष	तव	२. आपके
गोप	१०. ग्वाल वालों तथा	वत्सः	३. पुत्र
गोधन	११. गऊओं से	नर्मदः	५. आनन्द देने वाले हैं
वृतः	१२. घिर कर	प्रणयिनाम्	४. प्रेमी जनों को
यमुनायाम् ।	१३. यमुना में	विजहार ॥	१४. खेलने लगते हैं

श्लोकार्थ—हे निष्पाप यशोदा जी ! आपके पुत्र प्रेमी जनों को आनन्द देने वाले हैं। कुन्द के पुष्पों की माला से कौतुहल उत्पन्न करने वाला वेष धारण किये हुये नन्द जी के पुत्र ग्वालवालों तथा गऊओं से घिर कर यमुना में खेलने लगते है ॥

एकविंशः श्लोकः

मन्दवायुरुपवात्यनुकूलं मानयन् मलयजस्पर्शेन ।
वन्दिनस्तमुपदेवगणा ये वाद्यगीतबलिभिः परिवव्रुः ॥२१॥

पदच्छेद— मन्द वायुः उपवाति अनुकूलम् मानयन् मलयज स्पर्शेन ।
वन्दिनः तम् उपदेवगणाः ये वाद्यगीत बलिभिः परिवव्रुः ॥

शब्दार्थ—

मन्द	२. मन्द-मन्द	वन्दिनः	१०. बन्दी बन कर
वायुः	१. वायु	तम्	१३. उनकी
उपवाति	४. बह कर	उपदेवगणाः	९. (गन्धर्वादि) उपदेवतागण हैं वे
अनुकूलम्	३. अनुकूल	ये	८. (और) जो
मानयन्	७. उनका सम्मान करती है	वाद्यगीत	११. वाद्य गीत तथा
मलयज	५. चन्दन के समान	बलिभिः	१२. उपहारों से
स्पर्शेन ।	६. शीतल स्पर्श से	परिवव्रुः ॥	१४. सेवा करते हैं

श्लोकार्थ—उस समय वायु मन्द-मन्द अनुकूल बह कर चन्दन के समान शीतल स्पर्श से उनका सम्मान करती है । और जो गन्धर्वादि उपदेवता गण हैं वे बन्दी बन कर वाद्यगीत तथा उपहारों से उनकी सेवा करते हैं ॥

द्वाविंशः श्लोकः

वत्सलो व्रजगवां यदगध्रो वन्द्यमानचरणः पथि वृद्धैः ।
कृत्स्नगोधनमुपोह्य दिनान्ते गीतवेणुरनुगेडितकीर्तिः ॥२२॥

पदच्छेद— वत्सलः व्रज गवाम् यत् अगध्रः वन्द्यमान चरणः पथि वृद्धैः ।
कृत्स्न गोधनम् उपोह्य दिन अन्ते गीत वेणुः अनुग ईडित कीर्तिः ॥

शब्दार्थ—

वत्सलः	८. स्नेही (श्रीकृष्ण)	कृत्स्न	१०. सब
व्रज	६. व्रज की	गोधनम्	११. गौओं को
गवाम्	७. गौओं के	उपोह्य	१२. लौटा कर
यत् अगध्रः	५. जिनके लिये पर्वत को धारण किया था	दिन अन्ते	९. सायंकाल
वन्द्यमान	३. पूजित	गीतवेणुः	१६. बाँसुरी बजाते हुये आ ही रहे हैं
चरणः	४. चरण वाले भगवान्	अनुग	१३. सखाओं द्वारा
पथि	१. मार्ग में	ईडित	१४. गायी जाती हुई
वृद्धैः ।	२. वृद्ध जनों तथा (ब्रह्मादि) द्वारा	कीर्तिः ॥	१५. कीर्ति वाले (तथा)

श्लोकार्थ—अरी सखि ! मार्ग में वृद्ध जनों तथा ब्रह्मादि द्वारा पूजित चरण वाले भगवान्, ने जिनके लिये पर्वत को धारण किया था उन व्रज की गौओं के स्नेही श्रीकृष्ण सायंकाल सब गौओं को लौटाकर सखाओं द्वारा गायी जाती हुई कीर्ति वाले तथा बाँसुरी बजाते हुये आ ही रहे हैं।

त्रयोविंशः श्लोकः

उत्सवं श्रमरुचापि दृशीनामुन्नयन् खुररजश्छुरितस्रक् ।
दित्सयैति सुहृदाशिष एष देवकीजठरभूरुडुराजः ॥२३॥

पदच्छेद— उत्सवम् श्रम रुचा अपि दृशीनाम् उन्नयन् खुररजः छुरित स्रक् ।
दित्सयाएति सुहृद् आशिषः एषः देवकी जठर भूः उडुराजः ॥

शब्दार्थ—

उत्सवम्	७. आनन्द	दित्सया	१५. देने की इच्छा से
श्रम	४. परिश्रम की	एति	१७. आ रहे हैं
रुचा अपि	५. शोभा से भी	सुहृद	१३. मित्रों की
दृशीनाम्	६. नेत्रों को	आशिषः	१४. कामनाओं को
उन्नयन्	८. देते हुये	एषः	१६. वे (श्रीकृष्ण)
खुररजः	१. गायों के खुरों से उड़ी धूल से	देवकी	९. देवकी की
छुरित	२. शोभित	जठर	१०. कोख से
स्रक्	३. वन माला वाले	भूः	११. प्रकट
		उडुराजः ॥	१२. चन्द्रमा के समान अह्लादक

श्लोकार्थ—गायों के खुरों से उड़ी धूल से शोभित वनमाला वाले, परिश्रम की शोभा से भी नेत्रों को आनन्द देते हुये, देवकी के कोख से प्रकट, चन्द्रमा के समान आह्लादक, मित्रों की कामनाओं को देने की इच्छा से वे श्रीकृष्ण आ रहे हैं ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

मदविघूर्णितलोचन ईषन्मानदः स्वसुहृदां वनमाली ।
बदरपाण्डुवदनो मृदुगण्डं मण्डयन् कनककुण्डललक्ष्म्या ॥२४॥

पदच्छेद— मद विघूर्णित लोचनः ईषत् मानदः स्व सुहृदाम् वनमाली ।
बदर पाण्डु वदनः मृदु गण्डम् मण्डयन् कनक कुण्डल लक्ष्म्या ॥

शब्दार्थ—

मद	१. मद के कारण	बदर	९. बेर के समान
विघूर्णित	२. चढ़ी हुई	पाण्डु	१०. पीले
लोचनः	३. आँखों वाले	वदन	११. मुख वाले
ईषत्	६. कुछ	मृदु	१४. कोमल
मानदः	७. मान देने वाले	गण्डम्	१५. कपोलों को विभूषित
स्व	४. अपने	मण्डयन्	१६. करते हुये आ रहे हैं
सुहृदाम्	५. मित्रों को	कनक कुण्डल	१२. सोने के बने कुण्डलों की
वनमाली ।	८. वनमाला पहने हुये	लक्ष्म्या ॥	१३. कान्ति से

श्लोकार्थ—अरी सखी ! मद के कारण चढ़ी हुई आँखों वाले, अपने मित्रों को कुछ मान देने वाले, वनमाला पहने हुये, बेर के समान पीले मुख वाले सोने के बने कुण्डलों की कान्ति से कोमल कपोलों को विभूषित करते हुये आ रहे हैं ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

यदुपतिर्द्विरदराजविहारो यामिनीपतिरिवैष दिनान्ते ।
मुदितवक्त्र उपयाति दुरन्तं मोचयन् व्रजगवां दिनतापम् ॥२५॥

पदच्छेद — यदुपतिः द्विरदराज विहारः यामिनीपतिः इव एषः दिन अन्ते ।
मुदित वक्त्रः उपयाति दुरन्तम् मोचयन् व्रज गवाम् दिन तापम् ॥

शब्दार्थ—

यदुपतिः	६.	यदुराज श्रीकृष्ण	वक्त्रः	५.	मुख
द्विरदराज	१.	गजराज के समान	उपयाति	१६.	समीप चले आ रहे हैं
विहारः	२.	चलने वाले	दुरन्तम्	११.	असहनीय
यामिनीपतिः	१४.	चन्द्रमा की	मोचयन्	१३.	मिटाते हुये
इव	१५.	भाँति	व्रज	८.	व्रज की
एषः	३.	ये	गवाम्	९.	गौओं के
दिन-अन्ते ।	७.	सायंकाल में	दिन	१०.	दिन भर के
मुदित	४.	प्रसन्न	तापम् ॥	१२.	विरह जनित ताप को

श्लोकार्थ—ओह सखि ! गजराज के समान चलने वाले ये प्रसन्न मुख यदुराज श्रीकृष्ण सायंकाल में व्रज की गौओं के दिन भर के असहनीय विरह जनित ताप को मिटाते हुये चन्द्रमा की भाँति समीप चले आ रहे हैं ॥

षड्विंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—एवं व्रजस्त्रियो राजन् कृष्णलीला नु गायतीः ।
रेमिरेऽहःसु तच्चित्तास्तन्मनस्का महोदयाः ॥२६॥

पदच्छेद— एवम् व्रजस्त्रियः राजन् कृष्ण लीलाः नु गायतीः ।
रेमिरे अहः सु तत् चित्ताः तत् मनस्काः महोदयाः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	२.	इस प्रकार	रेमिरे	१२.	रम जाती हैं
व्रज स्त्रियः	४.	व्रज की स्त्रियाँ	अहः सु	६.	दिन में
राजन्	१.	हे राजन् !	तत् चित्ताः	९.	उन्हीं में चित्त और
कृष्ण लीलाः	५.	कृष्ण की लीलाओं का	तत्	१०.	उन्हीं में
नु	७.	निश्चित रूप से	मनस्काः	११.	मन को लगा कर
गायतीः ।	८.	गान करती हुई	महोदयाः ॥	३.	बड़ भागिनी

श्लोकार्थ—हे राजन् ! इस प्रकार बड़ भागिनी व्रज की स्त्रियाँ कृष्ण की लीलाओं का दिन में निश्चित रूप से गान करती हुई उन्हीं में चित्त और मन को लगा कर रम जाती हैं ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
वृन्दावनक्रीडायाम् गोपिकायुगलगीतं नाम पञ्चत्रिंशः अध्यायः ॥३५॥